॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से
समस्त आर्यजगत् को

आर्यसमाज स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष ३२, अंक १६ **एक प्रति : ३ रुपये**

सोमवार २३ मार्च, २००९ से २९ मार्च, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६५ दयानन्दाब्द : १८५

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के तत्वावधान में

आर्यसमाज मोहन गार्डन के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन

रविवार, 5 अप्रैल, 2009 यज्ञ : प्रात: 8.30 बजे से ब्रह्मा : आचार्य इन्द्रदेव

उद्घाटन समारोह : प्रात: 10.45 बजे से 1.00 बजे

मात्र एक वर्ष में भवन निर्माण के लिए किए गए अथक प्रयास हेतु इस अवसर पर

श्री रामजीलाल आर्य, श्री तेजभान आर्य, श्री रामेश्वर दयाल आर्य का विशेष सम्मान किया जाएगा

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं समाज के अधिकारियों का उत्साहवर्धन करें।

कार्यक्रम समाप्ति पर समस्त उपस्थित आर्यजनों के लिए ऋषि लंगर का आयोजन होगा।

-: निवेदक :-

ब्र. राजसिंह आर्य	विनय आर्य	अनिल तनेजा	सुरेन्द्र बुद्धिराजा	वीरेन्द्र सरदाना	रजनीश वर्मा	देवकी नन्दन आर्य	धर्मवीर आर्य
प्रधान (9350077585)	महामन्त्री (9350204466)	कोषाध्यक्ष (9873558465)	प्रधान (9810254630)	मन्त्री (9911140756)	कोषाध्यक्ष (9312163330)	प्रधान (9210345992)	मन्त्री (9810216281)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली आर्यसमाज मोहन गार्डन

पहुंचने का मार्ग : नवादा मैट्रो स्टेशन के बाद पिलर नं. 754 से राइट टर्न कर पीपल चौक से लेफ्ट टर्न लेकर सर्वोदय कन्या विद्यालय के बाद वाली गली से राइट टर्न लेकर राजस्थान स्वीट्स के साथ वाली गली में अन्दर।

"जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उनके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा।" - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

आर्यसमाज के प्रमुख अधिकारियों एवं सभा अन्तरंग सदस्यों की चिन्तन बैठक

दिल्ली सभा की अन्तरंग सभा में लिए गए निर्णय के अनुसार दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के प्रमुख तीन अधिकारियों एवं सभा के अन्तरंग सदस्यों की एक अत्यावश्यक ज्वलन्त विषय पर विचार करने हेतु **विशेष चिन्तन बैठक शुक्रवार 10 अप्रैल, 09 को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद** में आयोजित की गई है। अतएव दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अवश्य ही इस चिन्तन बैठक में पहुंचें। **बैठक का समय प्रात: काल 10.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक रहेगा। भोजन एवं जलपान की व्यवस्था बैठक स्थल पर होगी।** विस्तृत जानकारी अलग से भेजे गए पत्रकों में दी जा रही है। कृपया इस **बैठक को वर्तमान सन्दर्भ में अत्यावश्यक समझते हुए** अपना समय सुरक्षित कर लेवें। बैठक में पहुंचने सम्बन्धित तथा अन्य जानकारी के लिए निम्न अधिकारियों से सम्पर्क करें -

श्री सोमदत्त महाजन (9910176664), श्री ओम प्रकाश आर्य (9911155285), श्री अरुण प्रकाश वर्मा (9810086759), श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175), श्री शिवशंकर गुप्ता (9810505500), श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता (011-20500724) श्री शिवकुमार मदान (9310474979)। *- विनय आर्य, महामन्त्री, 9350204466*

दर्शन व्याख्या - 4

नास्तिक दर्शन : जैन दर्शन

जैन दर्शन :– जैन दर्शन भी वेद के प्रमाण और ईश्वर को स्वीकार नहीं करता, अतः इसकी गणना भी नास्तिक दर्शनों में की जाती है। जैन दर्शन का प्रारम्भ यज्ञों में पशुहिंसा की प्रतिक्रिया में हुआ है। इस विचारधारा को मानने वाले चौबीस तीर्थांकरों को मानते हैं। इनमें से चौबीसवें तीर्थांकर महावीर स्वामी का विशेष महत्त्व है। इन्होंने यज्ञों में दी जाने वाली पशुबलि का विरोध करते हुए 'अहिंसा परमो धर्मः' का सन्देश दिया जिसकी जैनदर्शन और जैन–मताव– लम्बियों में विशेष मान्यता है। जब महावीर स्वामी ने यज्ञवेदी पर पशु हिंसा का विरोध किया तो तत्कालीन याज्ञिक कर्मकाण्डी ब्राह्मणों ने इन्हें तर्क देते हुए कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेदों में यज्ञ में पशुबलि का विधान है तब महावीर स्वामी ने कहा कि मैं ऐसे ईश्वर और वेद को नहीं मानता। उनके इसी कथन ने वेद–विरोध के कारण जैन–दर्शन की गणना नास्तिक दर्शनों में की जाती है। यहां इस ओर संकेत कर देना भी अप्रासंगिक न होगा कि याज्ञिक कर्मकाण्डियों का यह तर्क भ्रांत ही था कि वेदों में यज्ञों में दी जाने वाली पशुबलि का विधान है। तत्कालीन कर्मकाण्डी ब्राह्मणों एवं वेद के जिन भाष्यकारों ने यज्ञों में पशुबलि का समर्थन किया है उनकी इस भ्रांतधाराणा का सतर्क खण्डन महर्षि दयानन्द ने किया है।

'जिजये' धातु से 'क्त' प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न 'जित' शब्द से ही 'जिन' शब्द भी बना है। 'जिन' कहते हैं मन और इन्द्रियों को वश में कर लेने वाले को, उन्हें जीत लेने वाले को और ऐसे व्यक्तियों के उपदेशों का पालन करने वाले या उनके जीवनादर्शों के अनुसरण करने वालों को जैन कहते हैं। जैन मतावलम्बी श्वेताम्बर और दिगम्बर नामक दो वर्गों में विभक्त हैं। जैन साहित्य मुख्यतः प्राकृत भाषा में लिखा गया है किन्तु इनके कुछ ग्रन्थ संस्कृत भाषा में भी लिखे गए हैं। जैन दर्शन के कुछ सुप्रसिद्ध ग्रन्थ हैं – उमा स्वाति का 'तत्त्वार्थाधिगम सूत्र', सिद्धसेन दिवाकर के 'न्यायावतार', 'सन्मतितर्क', 'तत्त्वार्थ टीका' आदि, नेमिचन्द्र का 'द्रव्यसंग्रह', मल्लिसेन का 'स्याद्वाद मंजरी', प्रभरचन्द्र का 'प्रमेय कमल मार्तण्ड' आदि ग्रन्थ। देव दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के 'द्वादश समुल्लास' में जैन दर्शन की मान्यताओं का उल्लेख करते हुए जैनमत की सम्यक् समीक्षा की है और इस मत की भ्रांत धारणाओं का सतर्क खण्डन किया है।

– क्रमशः – डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया

Question & Answer

Sankalp

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. **- Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q.: So no need to change/modify the traditional Hinduism and varnasrama dharma. This is the religion to be followed. **Vishal**

Ans.: Enternal knowledge can never be changed please. Whosoever can try, he will fail.

Q.: I am feeling depressed and I am not sure what will happen. I feel like dying. **Nitin**

Ans.: Vedas tell to think for pious desires only which is called sankalp and not otherwise. So it will be a sin even to think about death. Please do not be nervous. Be brave. We have to face the difficulties bravely and not to surrender. Please try hard and worship God then everything will be okay. You know there is hardly a house on the earth wherein sickness does not exist. So why to worry, arrange the medical treatment. I advise you to chant gayatri mantra both times at least for one half an hour each time. Also try to do havan from gayatri mantra and pray to God to bless you to finish the problem. I think you'll sure get relief. So my blessings are also with you for a long happy life of the family.

Q.: I want to know what are the meaning of Yogic terms "Urdvaretas" and "Brahmvarchas"? **Amit Dua**

Ans.: Urd means to go up but word varetas is not clear. Brahamvarchas means the knowledge of God (Tej and Oj in Hindi). *To be continued....*

देववाणी : संस्कृत

वैदिकवाङ्मये विज्ञानतत्त्वानि

– डॉ० हरीश्वर दीक्षित

सर्वशक्तिमद्‌भिः श्रीमद्‌भागवद्‌भिः क्षणभंगुरेऽस्मिन् संसारे प्रपञ्चे परिदृश्यमानायामस्यामीशसृष्टौ मानवानां कल्याणाय सद्‌सद्‌विवेकशालिनीम् मनुष्यजातिमधिकृत्य सदसदात्मकेषु कर्त्तव्याकर्त्तव्यावबोधादिविषयेषु प्रवृत्तः हितशासनात्मकः विधिनिषेध अध्यात्मविचारादिविषयकः नियतप्रवृत्तिनिवृत्ति आत्मनिष्ठादिप्रयोजकः धर्मगतः दिव्यालौकिकसाधनभूतः ईश्वरस्वरूपः सर्वज्ञानमयः वेदः एव प्रतिष्ठितः।

वेदेषु विज्ञानतत्त्वानि परिपूर्णानि सन्ति। सर्वप्रथमं सृष्टिप्रक्रियां वैज्ञानिकं महत्त्वं वेदेषु परिलक्ष्यते। विज्ञानस्य न किमपि क्षेत्रमवशिष्यते यत् वेदेषु संस्कृतसाहित्ये वा नोपलक्ष्यते। केवलम् अन्वेषणस्यावश्यकता विद्यते सर्वमिदं क्षेत्रं विज्ञानस्य यत्र कुत्रापि अवश्यमेव वेदेषु वैदिकवाङ्मसे वा परिलक्ष्यते। प्रारम्भे सृष्टौ सर्वप्रथमं आपः ज्लमेवासीत्। ऋग्वेदे अपः एव ससर्जादौ–

आपो ह यत् वृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्त्तताऽसुरेकः, कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

– क्रमशः

माता प्रेमलता शास्त्री का सम्मान

माता प्रेमलता शास्त्री आज आर्यजगत् के लिए एक मिसाल से कम नहीं हैं। स्व0 पृथ्वीराज शास्त्री जी के द्वारा स्थापित अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से भारत वर्ष के अनेक प्रान्तों में जैसे मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, उ.प्र., छत्तीसगढ़, उड़ीसा, आसाम, नागालैंड आदि में प्रकल्प चला कर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार ही नहीं कर रही हैं; अपितु मानव निर्माण का काम भी कर रही हैं। वर्तमान में दिल्ली के रानीबाग क्षेत्र में एक आर्य गुरुकुल का संचालन कर रही हैं। उपरोक्त उद्‌गार स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, संचालक गुरुकुल आश्रम आमसेना ने गुरुकुल आश्रम झज्जर के 94वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर 23 फरवरी को आयोजित समारोह में माता प्रेमलता शास्त्री जी का सम्मान करते हुए कहे। उन्होंने आगे कहा कि हम माताजी का सम्मान उड़ीसा में करना चाहते थे जहां हमें माताजी का आशीर्वाद और सहयोग हमेशा मिलता रहा; परन्तु माताजी की व्यस्तता के कारण यह सम्मान हमें यहां करना पड़ रहा है। माताजी का गुरुकुल आमसेना आश्रम और परममित्र मानव निर्माण संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में शाल, श्रीफल, प्रशस्तिपत्र, स्मृति चिह्न और 15 हजार नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। आचार्य बलदेव जी, स्वामी धर्मानन्द जी, चौधरी मित्रसेन आर्य, डॉ. महावीर मीमांसक, आचार्य शिशुपाल शास्त्री ने अपने करकमलों द्वारा माताजी का सम्मान किया। माताजी ने अपने हृदय की वेदना व्यक्त करते हुए दिल्ली में एक सुव्यवस्थित कन्या गुरुकुल संचालित करने की इच्छा व्यक्त की और सहयोग हेतु आर्यों का आह्वान किया। *– जोगिन्द्र खट्टर, महामन्त्री*

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में

अन्तर्विद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य विद्या परिषद् दिल्ली अन्तर्गत दिल्ली की आर्यसमाजों में संचालित होने वाले विद्यालयों की अन्तर्विद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन अप्रैल, 2009 में किया जा रहा है। इन प्रतियोगिताओं में भाषण, वादविवाद, चित्रकला, खेल, ऐथलेटिक्स आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा।

पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 2 मई, 2009 को एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।

प्रतियोगिताओं के नियमों एवं पुरस्कारों की सूचना आर्यसन्देश के अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी। आर्यसमाज से सम्बन्धित विद्यालयों के समस्त अधिकारियों तथा विद्यालय अधिकारियों से निवेदन है कि अपने विद्यालय की टीमों को तैयार अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

-: निवेदक :-

ब्र. राजसिंह आर्य	**विनय आर्य**	**सुरेन्द्र रैली**
प्रधान (9350077858)	महामन्त्री (9350204466)	प्रस्तोता (9810855696)

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

राजीव आर्य (अध्यक्ष) **अरविन्द नागपाल** (प्रबन्धक)

एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110026

भवन भाग्य वैदिक वास्तु

– विजय कुमार बहल

वास्तु शास्त्र तथा वास्तुकला का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक आधार वेद तथा उनके उपवेद हैं। भारतीय वाङमय में आधिभौतिक वास्तुकला (आर्किटैक्चर) तथा वास्तुशास्त्र का जितना उच्चकोटि का विस्तृत विवरण वैज्ञानिक आधारित ऋग्वेद, अथर्ववेद व यजुर्वेद में उपलब्ध है, उतना किसी अन्य साहित्य में प्रचुर विवरण नहीं मिलता है। विश्व के प्राचीन ग्रन्थ वेद ही हैं। ऋग्वेद, अथर्ववेद व यजुर्वेद में वेदमन्त्रों द्वारा व्यावहारित भवन चित्रण, भवन निर्माण, स्थलचयन की व्याख्या की गई है। इस भौतिक युग में मनुष्य जितना पर्यावरण वातावरण व वास्तु के प्रति अधिक सजग हो गया, उतना ही भवन निर्माता उद्योगपतियों की धन लोलुपता के कारण पृथ्वी पर अतिक्रमण का मुख्य कारण है। जनसंख्या का प्रतिदिन अधिकाधिक बढ़ना तथा प्रत्येक दम्पति का अपना अलग से निवास बनाने की होड़ लगी हुई है। इस कारण भवन उद्योगपति वैदिक विज्ञान यानी वास्तु व पर्यावरण को एक ओर कर दते हैं कि यह सब अप्रचलित पौराणिक विद्या है, क्योंकि वह लोग इससे अनभिज्ञ हैं। आज का प्राणी पाश्चात्य प्रणाली से विद्या प्राप्त करके, पाश्चात्य सभ्यता में इतना रंग गया है कि वह अपने वैदिक ज्ञान से बहुत दूर हो गया है तथा इसे अप्रचलित व रूढ़िवाद कहकर नकारता है। जबकि सभी प्रकार के विज्ञान, इन प्राचीनतम ग्रन्थों पर आधारित हैं।

विदेशी लोगों ने भारत में आकर हमारे ग्रन्थों का (वेदों) अध्ययन किया तथा सभी मूल वेद पुस्तकें यहां से उठाकर ले गए, उनका अनर्थ करके हमें देते हैं। हम उनके गलत विचारों को पढ़कर प्रसन्न होते हुए उनकी वाह–वाह करते हैं। हम लोग अपने वैदिक विज्ञान से पूर्णतया अनभिज्ञ हैं। हम भारतीय सरल हृदय होने से अन्ध विश्वासी भी हो गए हैं तथा विदेशी एक दम चालाक और धूर्त हैं। इन्हीं सब कारणों से महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि तथा सत्यार्थ प्रकाश की रचना करके जनसाधारण को वेदों से अवगत किया। वेदमन्त्रों का ज्ञान व उनकी वैज्ञानिक वास्तविकता को जनसाधारण को देने के लिए और वेदों के पठन–पाठन हेतु आर्यसमाज की स्थापना की।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार विधि में भी स्थल अनुसार स्थल शुद्धि, भूमि पूजन, वास्तु पूजा व यज्ञाग्नि द्वारा इनकी पूजा करने का विधान दिया है, महर्षि दयानन्द ने भवन शिलान्यास व गृह प्रवेश को भी संस्कार की संज्ञा दी है। यह संस्कार मनुष्य जीवन का एक मुख्य पड़ाव माना गया है। महर्षि वाल्मीकि ने भी रामायण में श्रीराम को स्थल चयन, भूमि पूजा तथा कुटि निर्माण हेतु निर्देश दिए थे।

भूखण्ड चयन :–

ओ३म् विश्वम्भरा वसूधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेश्नी। वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु।। (अथर्व. 12/1/6)

यह धरा मातृभूमि प्राण की माता है। यह मनुष्य तथा विश्व की पालन कर्ता है; क्योंकि यह रत्नवक्षा, रत्नगर्भा उत्तमोत्तम धन–धान्यों को धारण करने वाली है। यह धरा प्राणी जन को अपने ऊपर बसाती है और उन्हें प्रतिष्ठित व परिपुष्ट करती है। प्राणी जन को ऐश्वर्य प्रदान करती है तथा मनुष्य जीवन में प्रगति देने वाली सम्पत्तियों को प्राप्त करने में प्रेरणा दे पुष्ट व प्रशस्त करती है।

– शेष पृष्ठ 6 पर

बोध कथा

पाप के अन्न का दुष्परिणाम

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

पूज्य महात्मा हंसराज जी एक बार हरिद्वार के मोहन आश्रम में ठहरे हुए थे। एक वानप्रस्थी उनके पास ही एक कमरे में रहता था। एक दिन वानप्रस्थी महात्मा जी के पास आया और जोर–जोर से रोने लगा। महात्मा जी ने पूछा – ' क्या हुआ आपको?'

वह बोला – 'मैं लुट गया, महात्मा जी! मेरी उम्रभर की कमाई नष्ट हो गई!'

महात्मा जी बहुत घबराए। पूछने पर पता लगा कि वह वानप्रस्थी पिछले कई वर्षों से ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलता हुआ ध्यान और उपासना की सीढ़ी तक पहुंच चुका था। रात्रि के समय अपने कमरे में बैठ जाता वह। भगवान का ध्यान करता, ईश्वर ही शीतल ज्योति उसे दिखाई देती। उसे आनन्द से मस्त होकर वह घंटों बैठा रहता। परन्तु कल रात उसके साथ एक अद्‌भुत घटना घटी। रोते हुए उसने बताया – मैं ध्यान में बैठा महात्माजी, तो ऐसा प्रतीत हुआ कि रोशनी में लाल दुपट्‌टे वाली एक नौजवान लड़की खड़ी है। मैंने घबराकर आंखें खोल दीं। समझा, कुछ भूल हो गई है। फिर प्राणायाम किया, फिर ध्यान से ज्योति को देखा, परन्तु वह लड़की अब भी वहीं थी। मैं उसे जानता नहीं; परन्तु बार–बार मेरे सामने आकर खड़ी हो जाती है। मैंने बार–बार मुंह–हाथ धोकर प्राणायाम करने का प्रयत्न किया है। बार–बार उसे हटाने का प्रयत्न किया है, परन्तु रोशनी में उसके अतिरिक्त कुछ मुझे दिखाई देता नहीं। मेरी तो उम्र भर की कमाई लुट गई! मैं तो कहीं का न रहा! पता नहीं मुझे क्या हो गया? वह कहता जाता था और रोते जाता था।

महात्मा जी ने पूछा – 'किसी बुरे व्यक्ति की संगत में तो नहीं बैठे? कोई बुरी पुस्तक तो नहीं पढ़ी?'

उसने कहा – ऐसा कुछ नहीं किया मैंने। महात्मा जी ने कहा – 'कल तुम आश्रम से बाहर तो गए होंगे?' वह बोला – गया था, एक भण्डारे में। एक सेठ साहब आए थे। उन्होंने भण्डारा किया था, वहां खाना खाने गया था।"

महात्माजी ने कहा – 'जाकर पता लगाओ – वह सेठ कौन है और उसने भण्डारा क्यों किया था?' वानप्रस्थी गया। पता लगाकर उसने बताया कि सेठ एक शहर का रहने पाला है। वहां उसने अपनी नौजवान बेटी को एक बूढ़े के पास दस हजार रुपये में बेच दिया था। दो हजार रुपया लेकर वह हरिद्वार आया है कि पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए भण्डारा करा दे।

महात्मा जी ने इस बात को सुनकर कहा – 'यही वह नौजवान लड़की है, जो तुम्हें दिखाई देती है। तुमने जो कुछ खाया वह पुण्य भाव से दिया हुआ दान नहीं था, पाप की कमाई का एक भाग है – उस हतभाग्य लड़की का मूल्य। जब तक वह अन्न तुम्हारे शरीर से नहीं निकलेगा, तब तक उस दु:खी लड़की का दिखाई देना बन्द न होगा।'

यह है पाप का अन्न खाने का परिणाम! इससे आत्मा गिरती है। आगे बढ़ता हुआ मनुष्य पीछे गिरता है।

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय–द्वितीय पादः (28)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

नाभाव उपलब्धे:।।28।।

अर्थ – (न) नहीं (अभाव:) अभाव के (उपलब्धे:) प्राप्त होने से अर्थात् प्रमाणों द्वारा सिद्ध होने से।

भावार्थ – इस संसार को और इसके पदार्थों को हम प्रत्यक्ष रूप में देखते हैं और अनुभव करते हैं इसलिए इस जगत् को अभाव रूप नहीं कहा जा सकता। दुनिया में विद्यमान विभिन्न पदार्थों को हम अपनी आंखों से देखते हैं, इसके फूलों आदि को नाक से सूंघते हैं, जिह्वा से हम विभिन्न खाद्य पदार्थों को चखते हैं, त्वचा से इनके कोमल, कठोर स्पर्श से इन्हें जानते हैं, तब यह कैसे कह सकते हैं कि ये सब कुछ नहीं हैं, अभाव रूप हैं। यदि जगत् के सब पदार्थ अभावमात्र हैं तो हमें स्वयं अपना भी अभाव मानना होगा।

यदि कहो कि परमार्थ तत्व केवल ब्रह्म है उसके अतिरिक्त सम्पूर्ण जड़ जगत् जो हमें स्पष्ट दिखाई दता है वह भ्रम मात्र है। चेतन ब्रह्म इस रूप में भासित होकर क्रीड़ा करता है तो यह केवल इसकी एक व्याख्या मात्र है जिसका उपयुक्त स्पष्टीकरण सम्भव नहीं है। इस विषय में सूत्रकार का कथन है कि जगत् को भ्रममात्र या अभाव समझना ठीक नहीं है क्योंकि प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से इसकी सिद्धि होती है। यदि वास्तव में जगत् में का अस्तित्व न हो तो प्रमाणों से इसे उपलब्ध नहीं होना चाहिए। यह हमारा लोकसिद्ध अनुभव है कि जगत् सत्य है और भावरूप है। यह हमारे कथन को प्रमाणित करता है।

जगत् एक ऐसी वास्तविकता है जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। सभी कुछ अभाव मात्र है यह कहने से इसका अभाव नहीं हो जाता। जिन वस्तुओं को हम प्रत्यक्ष देख और अनुभव कर रहे हैं – उनका अभाव कहना समझदारी नहीं है।

– शिष्य शंका करता है कि लोक में हम स्वप्न में, बहुत से दृश्यों और पदार्थों को देखते हैं, परन्तु वास्तव में उनका अभाव होता है। ठीक उसी तरह जैसे जगत् और उसके पदार्थों की उपलब्धि को स्वप्न में होने वाली उपलब्धि के समान मान लिया जाए। तब जगत् को अभावरूप कहना क्यों ठीक नहीं है? सूत्रकार अगले सूत्र में इसका समाधान करते हैं।

– सी–2ए/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली–58

आर्यजनता की भारी मांग पर सभा द्वारा पुनः प्रकाशन

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित
छह सुन्दर डिजाइनों में

केवल मात्र 200/- रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के छोटी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

निर्वाण वर्ष की स्मृति घड़ियां

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष की स्मृति हेतु तैयार घड़ियां चार आकारों में तैयार कराई गई हैं। सुन्दर, आकर्षक डिजाइन एवं गोल्डन कलर में महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ तैयार ये घड़ियां मात्र 100/– में बड़े आकार में तथा 75/– रुपये में छोटी उपलब्ध हैं। इसके अलावा आर्यसमाजों के सत्संग हॉल में लगाने के लिए सुपर बड़ी घड़ी 300/– रुपये तथा टेबल घड़ी 50/– रुपये मात्र में उपलब्ध हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की संगीतमय प्रस्तुति

"गुरुदेव दयानन्द" ऑडियो सीडी

सुन्दर मधुर भजनों का मनभावन संकलन

केवल 20/- रुपये में

पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा–15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, दूरभाष : 011–23365959, टेलिफैक्स : 011–23343737, Email : aryasabha@yahoo.com; Web.: www.delhisabha.com

सारे भारत में फैली 125वें निर्वाण वर्ष की धूम
भारत–पाकिस्तान सीमा पर स्थित पुन्छ शहर में
आर्यसमाज की नई यज्ञशाला का उद्घाटन सम्पन्न

आर्यसमाज पुन्छ जो भारत व पाकिस्तान सीमा पर स्थित है, 2005 के भूकम्प में ध्वस्त हो गया था, उसका जीर्णोद्धार तथा नवीन यज्ञशाला का निर्माण कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में प्रधान श्री निशु गुप्ता, मन्त्री श्री विनोद गुप्ता, महिला प्रधान श्रीमती ज्योति गुप्ता, मन्त्री श्रीमती नीलम गुप्ता के अथक प्रयास से पूर्ण हो रहा है। इस यज्ञशाला के उद्घाटन तथा महर्षि दयानन्द बोधोत्सव पर नगर के आर्यजनों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा पं. रामाशीष शास्त्री थे। – *मन्त्री*

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

कॉमिक्स पढ़िए और जीतिए

5,00,000 रु० तक के इनाम

पांच लाख रुपयों की पुरस्कारी योजना

आज ही मंगवाएं

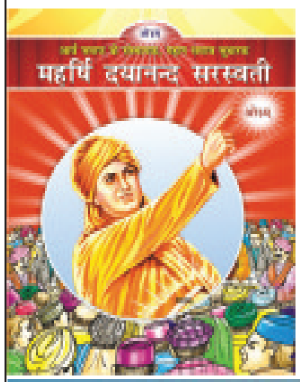

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने एवं परिवार के साथ जोड़ने के लिए तैयार कराई गई है कॉमिक्स। ये कॉमिक्स हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई गई हैं। अन्य भाषाओं में भी इनका अनुवाद कराया जा रहा है। पढ़ने वाले समस्त बच्चों के लिए एक प्रश्न पत्र भी दिया गया है जिसके सही उत्तर देने वालों के लिए 5 लाख रुपये तक के विभिन्न पुरस्कार भी दिए जाएंगे। इनामों का विवरण तथा नियम कॉमिक्स में दिए गए हैं। मूल्य मात्र 12 रुपये प्रति कॉमिक्स। आज ही आर्डर करें।

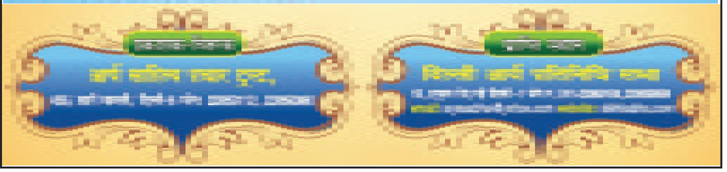

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) के अन्तर्गत गठित उपसमिति

राजार्य सभा की आवश्यक बैठक

रविवार 29 मार्च, 2009 प्रातः 10.30 बजे

स्थान : आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

आप सभी को विदित ही है कि कुछ समय पश्चात् भारत के समस्त राज्यों में लोकसभा चुनाव होने जा रहे हैं। ऐसे में आर्यसमाज का चुनाव एवं राजनेताओं के साथ वर्तमान में क्या योजना हो इस हेतु, दिल्ली सभा की उपसमिति राजार्य सभा के तत्वावधान में **आर्यसमाज के अधिकारियों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की आवश्यक बैठक रविवार 29 मार्च, 2009 को आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभागार में प्रातः 10.30 बजे से** आयोजित की गई है। समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में अपने सहयोगियों तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं सहित पधारकर संगठन को मजबूती प्रदान करें।

– विनय आर्य, महामन्त्री, 9350204466

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के एवं ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्यसमाज कोटा में "एक शाम राष्ट्र के नाम" आयोजित

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष एवं ऋषि बोधोत्सव की पूर्व संध्या पर विज्ञान नगर स्थित आर्यसमाज के प्रांगण में वहां उपस्थित श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से कार्यक्रम की सहभागिता व्यक्त की। 'एक शाम राष्ट्र के नाम' कार्यक्रम में दिल्ली से स्नेहलता सिंह, श्रीमती उषा भटनागर, सुश्री मनीषा, श्री भूपेन्द्र शर्मा, श्री मुकेश शर्मा व श्री प्रमोद व्यास ने मधुर भजनों एवं देशभक्ति से ओतप्रोत गीत प्रस्तुत किए। आधुनिक वाद्य यन्त्रों पर श्री दीपक, श्री निशेध, श्री प्रेमचन्द व श्री श्यामराव ने गायकों का साथ दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नगर निगम मेयर मोहन लाल महावर, सुपर थर्मल के मुख्य अभियन्ता विनोद कुमार, डिप्टी कमांडेंट हर्ष कोठारी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

स्वामी सुमेधानन्द ने किया पल्स पोलिया का शुभारम्भ

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा (राजस्थान) द्वारा चिकित्सा विभाग के सहयोग से 1 फरवरी, 2009 को दशहरा मैदान नगर निगम कार्यालय में स्थित प्लस पोलियो बूथ का शुभारम्भ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (सीकर) ने बालिका को पल्स पोलियो की दो बूंद पिलाकर किया। इस अवसर पर स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने कहा कि आर्यसमाज कोटा का यह प्रशंसनीय कार्य मानव सेवा की महत्ता को दर्शाता है।

– अरविन्द पाण्डेय, प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज नारायणा विहार में

योग कक्षा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नारायण विहार, नई दिल्ली का योग कक्षा वार्षिकोत्सव दिनांक 25 फरवरी, 09 को योग शिक्षिका प्रेमलता भटनागर द्वारा आयोजित किया गया। आर्यसमाज के प्रधान श्री सतीश कामरा ने तथा योगाचार्य ने दीप प्रज्जवलित कर उत्सव का आरम्भ किया। तत्पश्चात् योगाचार्यों का सम्मान भी प्रधान जी ने पटका डालकर तथा बैज लगाकर किया।

श्री कैलाश देव ने योग शिक्षा प्रशिक्षण दिया तथा योगाचार्य श्री जगमाल ने जड़ी बूटियों का प्रदर्शन कर उसकी उपयोगिता पर विशेष जानकारी दी। उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। भारी संख्या में लोगों ने इस शुभ अवसर का लाभ उठाया।

– प्रेमलता भटनागर, संयोजिका

डॉ. आचार्य ब्रह्मदत्त को पी.एच.डी. उपाधि और

रविवार 18 जनवरी, 2009 को होटल हिन्दुस्तान इन्टरनेशनल, कोलकाता में आयोजित 17वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (17th International Conference, Convocation & Awards Presentation Cercemony) इस भव्य समारोह में यू.एस.ए., रोमानिया, नाइजेरिया, मलेशिया, नेपाल, बंगलादेश आदि, तथा भारत सहित लगभग बाईस देशों के विशिष्ट सम्मानित महानुभावों के रजिस्ट्रार डॉ. एम. फोनिंग (इटली) महात्मा मैडम डॉ. क्रीस ग्रीस कौम (यू.एस.ए.), श्री टीओडोर वैसाइल (रोमानिया) संस्था के अध्यक्ष डॉ. सुरेश कुमार अग्रवाल (भारत) आदि की उपस्थिति में आर्यजगत् के प्रखर व्यक्तित्व सम्पन्न तथा बंगाल भूमि में सर्वप्रथम आर्ष गुरुकुल परम्परा के जनक, व्याकरण–दर्शन–आयुर्वेदाचार्य–स्वर्णपदक प्राप्त लगभग 75 विद्वानों विदुषियों, आचार्यों, पुरोहितों, प्रचारकों के निर्माता एवं अन्य गुरुकुलों के भी संस्थापक संचालक तथा प्रेरणास्रोत आचार्य ब्रह्मदत्त जी को 'न्यू ऐज इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, यूरोप' के अन्तर्गत 'वैदिक वाङ्मय में मानसिक रोगों की मनोवैज्ञानिक चिकित्सा' पर शोध उपाधि एवं स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व भी आचार्य जी को विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

– आचार्या मीरा शास्त्री,
आर्ष कन्या गुरुकुल आबादा, हावड़ा

घर वापसी कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज न्यू बेली रोड दानापुर पटना एवं धर्म जागरण समन्वय विभाग के संयुक्त तत्वावधान में पटना मुख्यालय से 50 किमी दूर स्थित पालीगंज अनुमंडल के सन्ता वन बिगहा, शेखपुरा, बारा, सियारामपुर, पंचायत के 95 परिवारों के लगभग छह सौ लोगों ने स्वेच्छापूर्वक इसाई धर्म छोड़कर शुद्ध होकर सत्य सनातन वैदिक धर्म को पुनः स्वीकार लिया। यह कार्यक्रम पालीगंजराम जानकी मन्दिर परिसर में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में स्थानीयकार्यकर्ता श्री सुरेश कश्यप का भरपूर सहयोग रहा। शुद्धि संस्कार में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा से सर्वश्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती, अरविन्द शास्त्री, मनोज शास्त्री, ओम प्रकाश शास्त्री, युगल किशोर ठाकुर, रूपेन्द्र के अतिरिक्त राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अनेक सदस्यों सहित दर्जनों साधु–सन्त व धर्मप्रेमी संगठनों के अधिकारी एवं सदस्य गण उपस्थित थे।इस अवसर पर उप सभा की ओर से प्रभावित गांवों में दर्जनों सत्यार्थ प्रकाश सामूहिक रूप से स्वाध्याय हेतु भेंट की गई।

– डॉ. आर. के. चौहान, प्रधान

मानव सेवा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान, 60 बी हुमायुपुर नई दिल्ली–29 द्वारा 22 फरवरी, 09 को गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली के सभागार में आयोजित 11वां अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।इस अवसर पर जन सेवा एवं शिक्षा के क्षेत्र में जीवन समर्पित करने वाले विद्वान, विदुषियों का अभिनन्दन तथा योग्य, जरुरतमंद अनाथ, निर्धन छात्र–छात्रओं को छात्रवृत्तियां प्रदान की गई।

– रामपाल शास्त्री, प्रधान

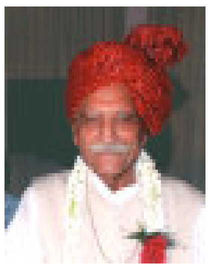

जीवेम शरदः शतम्

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता, दानवीर,

श्रद्धेय महाशय धर्मपाल जी

को 86वें जन्मदिवस की

हार्दिक शुभकामनाएं।

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली के

आध्यात्मिक दिव्य सत्संग एवं मानव कल्याण महायज्ञ

यज्ञ पूर्णाहुति एवं सम्मेलन : रविवार 29 मार्च, 2009

यज्ञ : प्रातः 8.30 बजे — ब्रह्मा एवं अध्यक्ष : ब्र. राजसिंह आर्य

भजन : पं. कुलदीप जी — मुख्यअतिथि : श्री प्रेम अरोड़ा

मुख्य वक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार, आचार्य सुभाष एवं श्री धर्मपाल आर्य

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– ओमप्रकाश आर्य (प्रधान) **सतीश चड्डा (मन्त्री)**

पृष्ठ ३ का शेष

इतो द्वियोजने तात बहुमूलफलोदकः। देशो बहुमृगः श्रीमान् पंचवटयभि विश्रुतः॥ (रामायण ९/२३)

हे राम! तात यहां से दो योजन की दूरी पर अनेक प्रकार के फल फूलों से युक्त, जलाशयों से परिपूर्ण और मृगों सेवित पंचवटी का नाम प्रसिद्ध है। यानि निवास योग्य स्थल वही उत्तम होता है; जहां पीने योग्य स्वच्छ जल उपलब्ध हो, पर्याप्त फल-फूल हों, छाया हेतु वृक्ष हों। मृग योनी पशु व पक्षियों का आवागमन व निवास हो। इसीलिए श्रीराम ने अपनी पर्णकुटी के निवास हेतु निर्माण कर वहां निवास किया था।

ओ३म् ऊर्जस्वती पयस्वती पृथिव्यां निमिता मिता। विश्वान्न विभ्रति शाले या हिंसी प्रतिगृहणता स्वाहा॥

(अथर्व. ९/३/१६)

ओ३म् आयने परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणी। उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान॥

ओ३म् अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम्। मधये ह्रदस्य नोगृहाः पराचीना मुखा कृधि॥

(ऋग्वेद १0/142/8, 7)

समतल प्रदेशों में जहां विपुल स्थल उपलब्ध हों, तब वहां विशाल आवास बनाए तथा सभी कक्ष पाकशाला, शयनकक्ष अतिथि कक्ष इत्यादि। प्रवेश व निकास द्वार पृथक-पृथक होने चाहिएं। भव्य मध्य में पुष्पित दूब-वाटिका, जलकुण्ड। फव्वारा हो, जो गृह को रमणीय व ठंडक देता है। समुद्र तटीय प्रदेश पर गृह के द्वार समुद्राभिमुख नहीं होने चाहिए।

अयं देशः समः श्रीमान पुष्पितैस्तरूभिर्वृनः। इहाश्रमपदं सोम्य यथावत्कर्तुमर्हसि॥ (रामायण 10/17)

सुगन्धित गृह :-

ओ३म् कस्य मृजाना अति यन्ति रिप्रमयुर्दधानाः प्रतरं नवीयः। आप्यायमानाः प्रजया धनेनाध स्याम सुरभयोगृहेषु॥(अथर्व 18/3/17)

गृह का अर्थ गृहस्थाश्रम वह पावन चलती है, जिसमें प्राणी छनकर, मानव पाप को त्यागते हैं। गृह ही वह पवित्रशाला है, जिसमें जीवन के सुफलों का आस्वादन किया जा सकता है। गृह वह आनन्दाश्रम है, जिसमें प्राणी सुनियम, सुसंयम व मर्यादा के साथ धर्मपूर्वक सहकारिता में जीवन पर्यन्त बसता है। तब गृहणियों के जीवन शुद्ध होते चले जाते हैं, और प्राणी सदा नवीनता, नवोल्लास से सुविकसित, दीर्घ सुदीर्घ हो जाते हैं तथा प्राणी का जीवन व गृह दोनों ही सुगन्धियुक्त होते हैं। गृह सुसंस्कारशाला व योगशाला में परिणित होते हैं तब उनके गृहों में जीवन सुरभियां महकती हैं।

ऋषि ने अथर्ववेद में भूमि को माता समाज संज्ञा देकर धरा के प्रति गहन ज्ञनेहस्निग्धा भावों से आत्मनिष्ठा का परिचय देकर कहा है। धरा हमें मातृस्नेह से तृप्त करती है।

ओ३म् यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति। सा नो भूमीर्भूरिधारा पयो दूहामथो उक्षतु वर्चसा॥ (अथर्व 12/1/9)

इस पृथिवी माता की नदियों सरिताओं से जलधारा बह रही है। जैसे मातृस्तनों से शिशु के लिए दुग्ध धाराएं स्रवित होती हैं। इसी प्रकार धरती माता की गोद में निवास करने वाले प्राणियों को उसके स्तनों से जो खाद्य व पेय मिल रहे हैं उनसे सब प्राणी वर्च, तेज ओज बल, पराक्रम प्राप्त करते हैं। पृथ्वी के मातृस्तनों से दिन-रात अनवरत, निरलस सब ओर से प्रवाहित रहने वाली जल धाराओं से परिपूर्ण पृथिवी पर अन्नफूल-फल वनस्पति आदि असंख्य पेयपूर्ण जीवनप्रद वस्तुएं सतत् सन्तत निरन्त सुप्रवाहित हो रही हैं, और हम उसका पान व ग्रहण कर सुपुष्ट होते हुए वर्च सौन्दर्य एवं ऐश्वर्य से निष्पन्न होते हैं।

जब हम ऋषि विचारों के अनुसार गृह भवन/कार्यालय भवन हेतु स्थल का चुनाव करते हैं तब हमारे यहां लक्ष्मी का प्रवेश होता है यानी हम सपरिवार सुख-सम्पन्न, ऐश्वर्यवान स संपुष्ट होते हैं। उस गृह भवन/कार्यालय भवन को वास्तु तथा पर्यावरण से शुद्ध पवित्र रखना चाहिए। उसे कैसे शुद्ध पवित्र व प्रशस्त रखें इसे मननशील प्रशस्त विद्वान् वेद मन्त्रों द्वारा कहते हैं।

ओ३म् इहैव ध्रुवां नि मिगोमीशालां क्षेमे तिष्ठातिद्यृतमुक्षमाणा। तांत्वाशाले सर्ववीराः सुवीरा अरिष्टवीरा उप सं चरेम॥ (अथर्व. 3/12/1)

भवन निर्माण कार्य में साधारण श्रमिक (बेलदार) से लेकर एक दक्ष विश्वकर्मा (वास्तुकार/आर्किटैक्ट) तक की सेवाएं समान रूप से आवश्वयक और उपादेय हैं। मिट्टी, ईंट रेत, पत्थर, लोहा, तांबा, काष्ठ, आदि पदार्थों की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार स्वच्छ वायु, प्राकृतिक प्रकाश तथा स्वच्छ पेय जल भी आवश्यक है। निर्माण कार्य में जैसे श्रमिक व विश्वकर्मा का महत्व है, उसी प्रकार ईंट-पत्थर मिट्टी की ही तरह बहुमूल्य धाातु काष्ठ का महत्व है। उसी प्रकार वास हेतु वायु, तल, प्रकाश भी अनिवार्य है। प्राणी को उचित है कि भवन को सुदृढ़ व परिमाणयुक्त बनावें तथा उचित विभाग/शाला यानि शयन कक्ष पाकशाला, प्रसूति कक्ष, यज्ञ शाला का भी उचित स्थान पर होना आवश्यक है। ऐसे भवन वासी सर्वदा स्वस्थ, उद्योगी विद्वान् व धनवान होते हैं। नव निर्माण में पुराने भवन की सामग्री प्रयोग नहीं करनी चाहिए। पुरानी सामग्री वास्तु दोष उत्पन्न करती है। कुशल, कुशाग्र बुद्धिमान वास्तुकार, विश्वकर्मा से ही भवन प्रतिरूप चित्रण व निर्माण करावें।

ओ३म् धरूण्यसि बृहच्छन्दाः पूतिध न्या।आत्वावत्सोगमेदाकुमारआधेनवः सायमास्पन्दमानाः॥ **(अथर्व. ३/१२/३)**

देवानां स्थापनं पूजा पापध्नं दर्शनादिकम। धर्मवृद्धि र्भवेदर्थ कामो मोक्षस्ततो नृणाम्॥ (प्र.मं. १/३४)

प्रथ्वीवासी प्राणियों को आवश्यक है कि भवन निर्माण में यज्ञशाला देवगृह/पूजागृह स्थान बनावें। तभी वह भवन निवासी धर्म विज्ञान से ओतप्रेत होते हैं तथा भाग्यवान धनवान समृद्व व प्रशस्त होते हैं। ऐसे वासी यश व मोक्ष प्राप्त करते हैं। ऐसे भवन वास्तु शुद्ध होते हैं।

दिशा का महत्व :-

ओ३म् सहस्त्र श्रंगो बृषभो य समुद्रदुदाचरत्। तेनो सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि॥

(ऋग्वेद ७/५५/७)

हम प्राणियों को भवन निर्माण चित्रण इस प्रकार करना चाहिए कि हमारे भवन को सूर्य की किरणे चारों ओर से स्पर्श करे जिससे गृह में सदा सकारात्मक ऊर्जा उद्धृत होती रहे। हमें भवन को उत्तर-पूर्व में अधिक खुला रखना चाहिए जिससे सूर्योदय के पहले प्रहर की किरणें अविरल प्रवेश पावें। तब वह गृह स्वास्थ्यवर्द्धक व वास्तु शुद्ध होता है। ऐसे परिवार को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे भवन को वास्तुशास्त्री प्राणी की भाग्य उपलब्धि मानते हैं।

ओ३म् पंचवाही वहत्यग्रमेषां प्रष्टयो युक्ता अनुसंवहन्ति। अयातमस्य दृद्दशे न यातंपरं नेदियोवरं ऽदवीयः॥ (अथर्व १०/८/८)

मननशील प्राणी को आवश्यक है कि पंच तत्वों के सन्तुलन को ध्यान में रखकर गृह/कार्य भवन का प्रतिकृति चित्रण एवं निर्माण करें। जैसे जगत्कर्ता विश्वकर्मा परमेश्वर ने पंचतत्व जल, पृथिवी, तेज (अग्नि) प्रकाश वायु व आकाश की रचनाकर इन्हें सन्तुलन में रखकर विश्व को नियम पूर्वक चलाता है। उसी प्रकार जब भवन में प्राकृतिक वायु, प्रकाश, शुद्ध जल का अविरल प्रवाह रहता है तब वह भवन वैदिक वास्तु शुद्ध होता है तथा भवन निवासी स्वस्थ व प्रशस्त होते हैं।

भवन पर तुलसी का महत्व :-

ओ३म्श्यामासरूपंकरणीपृथिव्या अध्युदभृता। इदमुषु प्र साधय पुना रूपाणिकल्पय॥

तुलसी एक उत्तम घरेलू वैद्य है। श्यामा (काली) तुलसी मानव के स्वपरूप को सुन्दर व मनोहारी बनाती है। तुलसी को हिन्दु धर्म में जगत जननी पद प्राप्त है। इसीलिए इसे वृन्दा भी कहा जाता है। इसीलिए सभी वरिष्ठजन इसकी पूजा का विधाान बताते हैं। तुलसी का पौधा औषधीय गुणों से परिपूर्ण होने के साथ-साथ सुगन्धित तेल का भी महत्वपूर्ण स्रोत है। औषधीय गुण जिनके अनुसार यह वातावरण को शुद्ध करती है तथा प्राणी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक कृमियों का अन्त करती है। यज्ञ आचमन जल में तुलसी का पत्ता तथा मन्दिर में चरणामृत में भी तुलसी का पत्ता इसीलिए डाला जाता है। गांव के वरीष्ठ जनों के मतानुसार चन्द्रग्रहण व सूर्यग्रहण के पहले के बने भोजन में अगर तुलसी के पत्ते डाल दिए जावें तो उस पकवान पर ग्रहण का असर नहीं होता।

तुलसी के औषधीय गुणों के अनुसार इसका उपयोग का श्वास ज्वर पार्श्वमूल अग्निमांद्य, गुर्दे, उदरशूल इत्यादि रोगों के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त तुलसी का उपयोग दंत मंजन माउथवाश, व सौन्दर्य प्रसाधानों में किया जाता है। तुलसी का पौधा रखने से घर में मच्छर आदि नहीं रहते।

तुलसी सम्पूर्ण भारत तथा निकटवर्ती देशों में भी पाई जाती है। भवन मध्य आंगन के उत्तर पूर्वी कोण (ईशान) में इसका रोपण अधिक शुभ माना जाता है। तुलसी सवंत्सर हरी रहती है। पद्मपुराण के अनुसार, जिस भवन में एक भी तुलसी का पौधाा रोपण होता है उस भवन में ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों ही निवास करते हैं।

आज भौतिक पाश्चात्य विचाराधीन प्राणी अपने सनातन वैदिक शास्त्रों से पूर्णतया अनभिज्ञ हो गया है। यूं तो वास्तुशास्त्र पर अनेकों ग्रन्थ उपलब्ध हैं। किन्तु जो विषय सामग्री वेदों में ऋषियों ने प्रमाणिकता से दी है उतनी दूसरे किसी ग्रन्थ में नहीं मिलती। संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद के सातवें मंडल में 54वें, 55वें सूक्त में वास्तुशास्त्र/भवन निर्माण के अनेक मन्त्रों में व्याख्या दी गई है। इसी प्रकार अथर्ववेद के 9वें मंडल के 7वें सूक्त में तथा 12वें मंडल के प्रथम सूक्त में भवन निर्माण व वास्तु की व्याख्या की गई है। महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत संस्कार विधिा के गृहस्थाश्रम प्रकरण में भी गृह निर्माण, गृह प्रवेश, भवन सजावट तथा पंचमहाभूत तत्वों के सन्तुलन हेतु वेदमन्त्रों द्वारा व्याख्या की गई है।

- डी- २९३, निर्माण विहार, विकास मार्ग, दिल्ली-९२

तिहाड़ कारागार में होली के अवसर पर यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 12 मार्च, 09 को आर्यसमाज सागरपुर के पूर्व प्रधान श्री जयदेव वर्मा ने युवाबन्दियों के साथ बैठकर यज्ञ सम्पन्न कराया और प्रार्थना मन्त्रों का संक्षेप में अर्थ भी किया।

आर्यसमाज मयूर विहार, फेज–1 के प्रधान श्री विद्या सागर वर्मा (भूतपूर्व राजदूत) ने युवा बन्दियों से खेद व्यक्त करते हुए समझाया कि हम यहां मिल रहे हैं फिर भी आप अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनें। जो आपको अच्छा न लगे वह काम न करें। जब मन में बुरे विचार आएं तब उल्टा भाव सोचें। रात्रि में आत्म निरीक्षण करें। जीव कर्मफल की समाप्ति तक जन्म लेता है। परमात्मा का साक्षात् मोक्ष में है अच्छे कर्मों का प्रभाव अन्दर अच्छा बनता जाता है और बुरे कर्मों का बुरा। अच्छे कर्मों के फलस्वरूप अगला जन्म, स्वभाव, बुद्धि मिलती है। जेल में भी हम किसी कर्म के फलस्वरूप आए हैं। अच्छे व्यवहार के कारण सजा में छूट भी मिलती है। God sees the Truth: but waits.

श्रीमती सुधा वर्मा ने 'तेरे दर को छोड़कर किस...' गीत सुनाया उसी समाज से पधारे श्री ओमप्रकाश खेड़ा जी ने कहा कि मन एक समय में एक ही कार्य करता है। यज्ञ में मन न होने पर यज्ञ असफल होगा। बन्दीगृह में यज्ञ समिति के प्रबन्धक आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर ने यज्ञ के बाद होली का महत्व बताकर उसको अच्छे प्रकार से मनाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि गुलाब और केवड़े के जल के छींटे दिए। इत्र लगाकर वातारण को भव्यता प्रदान की। आर्यसमाज हनुमान रोड़ द्वारा दी गई वेद ईश्वरी यज्ञान पुस्तकें वितरित की गई।

– यज्ञ संयोजक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

आर्ष गुरुकुल, रानीकोट, हसामपुरा, पो. लेकोड़ा, उज्जैन (म.प्र.)

प्रवेश प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित आर्ष शिक्षा प्रणाली के प्रबल पोषक, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक–संचालक सार्वदेशिक और परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान स्व0 स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की पावन स्मृति में धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक नगर उज्जैन में प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण 17 बीघे में विकसित विस्तृत परिसर में स्थापित आर्ष गुरुकुल में नए छात्रों का प्रवेश, कक्षा 6 व उससे ऊपर की कक्षाओं में आरम्भ हो गया है। छात्रों की आयु 10–12 वर्ष तथा योग्यता कक्षा 5 की हो।

आश्रम और भोजन खर्च 7 हजार रुपये वार्षिक। आर्य परिवारों के मेधावी, निर्धन, सुपात्र छात्रों तथा अहिन्दी भाषी दूर–दराज के जनजातीय क्षेत्रों के छात्रों को शुल्क में सम्पूर्ण अथवा आंशिक छूट। स्थान सीमित आवेदन शीघ्र करें।

अध्यापक चाहिएं

आर्ष गुरुकुल हसामपुरा उज्जैन के लिए संस्कृत व्याकरण, साहित्य, इतिहास, धर्म, दर्शन, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, और हिन्दी आदि विषयों के लिए पुरुष अध्यापकों की आवश्यकता है। योग्य अभ्यर्थी तुरन्त आवेदन और सम्पर्क करें।

– स्वामी सत्यबंधु सरस्वती, महामन्त्री (09993486107)

आर्यसमाज वीर सावरकर नगर, जयपुर हाउस आगरा (उ.प्र.) का

वार्षिकोत्सव

11 से 12 अप्रैल, 2009

यज्ञ : प्रतिदिन 7 से 9 बजे
ब्रह्मा : डॉ. महावीर जी, वेदप्रकाश शास्त्री
भजन : पं. रघुनाथ वैदिक भूषण

– आनन्द कपूर, मन्त्री

आर्यसमाज मदनगीर, नई दिल्ली का

35वां वार्षिकोत्सव समारोह

रविवार 29 मार्च, 2009

यज्ञ : प्रातः 8.30 से 9.30 बजे
विश्वशान्ति में आर्यसमाज का योगदान
अध्यक्षः श्री आर. के. तनेजा
मुख्य अतिथि : डॉ. योगानन्द शास्त्री
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर समारोह की शोभा बढ़ाएं।

– हरीचन्द, प्रधान
अन्तराम आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा, नई दिल्ली में

वेद प्रचार कार्यक्रम

9, 10, 11, 12 अप्रैल, 2009

यज्ञ : प्रातः 8 से 9 बजे
ब्रह्मा : पं. जयप्रकाश शास्त्री
प्रवचन : आचार्य डॉ. सूर्यनारायण जी
प्रवचन : प्रातः 9.00 से 9.45 बजे
भजन : प्रातः 9.45 से 10.30 बजे
आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– चूनीलाल विज, प्रधान
अमरनाथ गोगिया, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज शहीद नगर

भुवनेश्वर–7 (उड़ीसा)

प्रधानः इं. प्रियव्रतदास
मन्त्री : इं. ब्रजबन्ध पाण्डा
कोषाध्यक्ष : श्री गोविन्दचन्द्र महान्ती

आर्यसमाज नकुड़,

सहारनपुर (उ.प्र.) – 247342

प्रधान : श्री धर्मपाल गुप्ता
मन्त्री : श्री भूपेन्द्र कुमार गोयल
कोषाध्यक्ष : डॉ. शिव कुमार आर्य

होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज दरियागंज, नई दिल्ली के तत्वावधान में आर्य परिवारों द्वारा होली मंगल मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें सभी उपस्थित नर–नारियों व बच्चों ने मन–मुटाव, ईर्ष्या, विद्वेष का मिलकर होम किया तथा चन्दन, पुष्प व गीतों से मंगल–मिलन का आनन्द उठाया।

इस अवसर पर आचार्य अजय जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया तथा डॉ. हरिदेव शास्त्री द्वारा मनमोहक एवं ज्ञानवर्धक प्रवचनों से आर्य परिवारों ने लाभ उठाया।

आर्य स्त्री समाज के पदाधिकारियो श्रीमती चन्द्रकान्ता चौहान, वीण पुरी व श्रीमती बाला चौधरी व अन्य सदस्यों द्वारा विशिष्ट संगीतमयी भजनों का श्रवणकर उपस्थित जनमानस मुग्धहो गए। इस अवसर पर उपस्थित 120 बच्चों को निःशुल्क कापी व पेन वितरित किए।

– मन्त्री

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा के तत्वावधान में

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में आयोजित ऋषि बोधोत्सव इस वर्ष विशेष उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। इस वर्ष जहां एक ओर वाद विवाद प्रतियोगिा एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, वहीं मन्त्रोच्चारण एवं प्रश्नमंच प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। इस वर्ष की विशेष उपलब्धि रही महर्षि दयानन्द बॉलीबॉल टूर्नाकैंट। इसमें आस–पास की 16 तालुकाओं की टीमों ने भाग लिया।

इस वर्ष 17 से 23 फरवरी तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य विद्यादेव एवं उपाचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में आयोजित किया गया जिसके मुख्य यजमान थे – जस्टिस राजेन्द्र नाथ मित्तल, पूर्व न्यायाधीश पंजाब/हरियाणा तथा श्रीमती एवं श्री योगेश मुंजाल एवं परिवार के सदस्य। पूरे सप्ताह श्री पं. सत्यपाल पथिक (अमृतसर) एवं श्री विजय आनन्द (फिरोजपुर) के भजनों का कार्यक्रम रहा।

23 फरवरी को यज्ञपूर्णाहुति के उपरान्त ध्वजारोहण श्री राजेन्द्रनाथ मित्तल ने किया। इसके बाद पधारे हुए संन्यासीवृन्दों एवं टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टियों के नेतृत्व में शोभायात्रा आरम्भ हुई। शोभायात्रा टंकारा की गलियों में होते हुए पुनः टंकारा परिसर में पुनः समाप्त हुई। शोभयात्रा जब टंकारा ग्राम की मस्जिद के सामने गुजरी तो वहां के मुस्लिम भाईयों ने ऋषि भक्तों को ठण्डा मीठा जल पिलाया। तदुपरान्त दोपहर दो बजे से श्रद्धांजलि सभा काया आयोजन न्यायाधीश श्री राजेन्द्रनाथ मित्तल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

– मन्त्री

शोक समाचार

श्री हसमुख परमार को पत्नीशोक

आर्यसमाज टंकारा के मन्त्री एवं बृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री हसमुख परमार की धर्मपत्नी श्रीमती मंजुला बहन (मनीषा बहन) का 55 वर्ष की आयु में दिनांक 27 फरवरी, 09 को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार आचार्य रामदेव शास्त्री के नेतृत्व में उपदेशक विद्यालय के छात्रों द्वारा वेद मन्त्रों से पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्रीमती मंजुला जी की स्मृति में 9मार्च को शान्तियज्ञ एवं प्रार्थना सभा आयोजित की गई।

श्री महेन्द्र आर्य को पुत्रशोक

श्री महेन्द्र आर्य गांव घेवरा आर्यसमाज व आर्यवीर दल के कर्मठ कार्यकर्ता के सुपुत्र श्री नवीन आर्य का हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। श्री नवीन आर्य आर्यवीर दल के कर्मठ कार्यकर्ता थे तथा जिला संचालक के पद पर कार्य कर रहे थे। वे तन–मन–धन आर्यवीर दल व आर्यसमाज के कार्यों में दिन–रात सहयोग करते थे। गत वर्ष ही उनका विवाह हुआ था। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी तथा माता–पिता का भरा परा परिवार छोड़ गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

23 मार्च, 2009 से 29 मार्च, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २६/२७-०३-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,
श्री..

जम्मू चलो! जम्मू चलो!! जम्मू चलो!!!

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर के तत्त्वावधान में

विश्वशान्ति महायज्ञ एवं

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

24 से 26 अप्रैल, 09 : महाजन हॉल, शालामार, जम्मू (ज० क०)

दिल्ली से जाने वाले महानुभावों के लिए श्रीनगर–जम्मू भ्रमण की व्यवस्था

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें। पधारने वाले समस्त आर्यजनों के भोजन व आवास की व्यवस्था सभा की ओर से की जाएगी। दिल्ली से भाग लेने वाले आर्यजन *'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड, नई दिल्ली –110001'* पर सम्पर्क करें।

निवेदक : **भारतभूषण गुप्ता** (प्रधान), **डॉ. रविकान्त गुप्ता** (मन्त्री) – आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर

125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में
आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा
(उ.प्र.) के तत्त्वावधान में

आर्य महासम्मेलन

चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ

27, 28, 29 मार्च, 2009

स्थान: महाराजा अग्रसेन भवन, शाहगंज लोहामंडी मार्ग, आगरा (उ.प्र.)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें।

सम्पर्क कार्यालय : 3/8 चौक, थाना ताजगंज, आगरा (उ.प्र.)

125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में
आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

आर्यवीर क्रिकेट प्रतियोगिता

11 अप्रैल, 09 प्रात: 7 बजे

मिण्टो रोड पार्क, डी.डी.यू मार्ग, न.दिल्ली

विजेता, उपविजेता टीम, मैन आफ द टूर्नामेंट, एवं अन्य श्रेणियों को भी पुरस्कार

निर्देश: आर्यवीर दल की शाखा में नियमित रूप से आने वाले आर्यवीर ही प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। टीमें/शाखाएं अपने बैट साथ में लाएं। समय पर आने वाली टीमों को ही प्रतियोगिता में भाग लेने दिया जाएगा। किसी भी स्थिति में अम्पायर का निर्णय अन्तिम होगा। एक शाखा से केवल एक ही टीम भाग ले सकती है। सभी प्रतिभागियों के लिए भोजन की व्यवस्था आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से होगी। अधिक जानकारी के लिए 9899008054, 9868540351, 24504864 पर सम्पर्क करें।

– वीरेन्द्र आर्य, संचालक
सुन्दर आर्य, महामन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर